बिहार राज्य के दरभंगा जिले मे बंजर एवं चारण भूमि की समस्याएँ

समरजीत कुमार सिन्हा[1], डॉ0 आर.एन. ठाकुर [2]

1. शोधार्थी, भूगोल विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण, बिहार।
2. प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत) भूगोल विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण, बिहार।

मुख्य शब्द - **बंजर एवं चारण भूमि की समस्याएँ**

सारांश

उत्तर बिहार में बागमती नदी के किनारे बसा दरभंगा एक जिला एवं प्रमंडलीय मुख्यालय है इसके अन्तर्गत तीन जिला दरभंगा, मधुबनी एवं समस्तीपुर आते है। दरभंगा शहर के बहुविध एवं आधुनिक स्वरूप का विकास 16वीं सदी में मूल व्यापारियों तथा आइनवार शासको द्वारा विकसित किया गया है अपनी प्राचीन संस्कृति एवं बौद्धिक परंपरा के लिए यह शहर विख्यात रहा है।

बंजर भूमि के कारण बिहार में वनो की कटाई के परिणामस्वरूप पृथ्वी का वानस्पतिक आवरण कम हो जाने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया असंतुलित पर्यावरण की वजह से अत्यधिक वर्षा एवं सुखे से भूमि क्षरित होने लगी।

विशिष्टशब्द– व्यापार, सिंचाई, जलवायु एवं मृदा।

भूमिका–

मिट्टी जन्म से मृत्यु तक मानव के साथ रहती है तथा उसका साथ देती है। यह प्रकृति की वह अनुपम देन है जिसके बिना मानव का अस्तित्व ही संभव नहीं है। दार्शनिक भाषा में मिट्टी को ''अनन्त'' जीवों की आत्मा कहा गया है, परन्तु आज वृक्ष रूपी मृदा के आवरण को नष्ट कर हम इस आत्मा को चोट पहुँचा रहे हैं। इसलिए मृदा अपक्षीणन, सम्पूर्ण मानव जाति के सम्मुख एक विकट चुनौती है जिसका वह सामना कर रहा है। यदि हम ऐतिहासिक साक्ष्यों की तरफ देखें तो ज्ञात होता है कि ज्यादातर प्राचीन सभ्यताएँ उपजाऊ भूमियों पर फली–फूली तथा मृदा अपक्षीणन का कारण रहा जिससे पश्चिम भारत, एशिया और अमेरिका

में विकसित प्राचीन सभ्यताएँ मोहनजोदड़ों हड़प्पा, मेसोपोटामिया और मायन आदिद्ध विलुप्त हुई।[1]

आज मानव समाज की ही अज्ञानता एवं स्वार्थ के कारण मृदा का ह्रास दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिसको पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है, भूमि की उत्पादकता कम हो रही है एवं ईंधन चारा व अनाज की कमी महसूस की जा रही है। किसी न किसी रूप से क्षीण एवं बंजर हो चुकी है तथा जिसका मुख्य कारण भूमि अपरदन, लवणत एवं जल भराव का बढ़ना है, जिसके कुप्रभाव भी यदा–कदा प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, सूखा, महामारी आदि रूपो में सामने आ रहे हैं। इन समस्याओं की मृख्य जड़ वनों की अंधाधुंध कटाई तथा जल संरक्षण उपायो की अनदेखी है।

इस विकट परिस्थिति से उबरने के लिए आवश्यकता है कि बंजर भूमि/क्षीण भूमि का चहुँमुखी वैज्ञानिक तथा गैर–परम्परागत तरीकों से प्रबन्धन किया जाय, जिससे कि प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुँचाये बिना बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन, ईंधन, व पशुओं के लिए चारा उत्पादित किया जा सके, तथा पर्यावरणीय संतुलन को पुर्नस्थापित कर क्षारित संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकें।

क्षीण/बंजर/बेकार भूमि की परिभाषा :

क्षीण/बेकार भूमि को परिभाषित एवं वर्गीकृत करने के लिए दिसम्बर 1985 में योजना आयोग द्वारा तकनीकी कार्य के लिए एक दल का गठन किया गया जिसके अनुसार नवीन परती भूमि को छोड़कर ऐसी सभी भूमि जो किन्हीं कारणों से बेकार एवं अनुपयोगी है उसे 'बंजर भूमि' कहते हैं।

योजना आयोग ने 1987 में बंजर भूमि को पुनः निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया, 'ऐसी भूमि जिसमें कोशिश करने पर वनस्पति उग सकती हैं तथा उसका भरपूर उपयोग नहीं हो पा रहा है एवं जिसका ह्रास उपयुक्त जल व भूमि प्रबंधन न करने की वजह से हो रहा है।'

भूमि के क्षीण/बंजर बनने के कारण :

देश के अधिकांश भूमिक में भू–क्षरण के निरंतर लक्षण, बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव के कारण स्पष्ट दिखायी पड़ते हैं। मानव समाज का भूमि पर अत्याधिक दबाव व कुछ प्राकृतिक कारणों से भू–क्षरण अधिक होता है जिसका विवरण निम्नवत् हैं।

भूमि क्षीणन के अनेकों कारण है जिनको मुख्यतः दो भागो में विभाजीत किया जा सकता है।

शोध प्रविधि :–प्रस्तुत शोध आलेख विलेषणात्मक एवं वर्णानात्मक प्रकृति है शोध कार्य के लिए द्वितीय स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः इंटरनेट से प्राप्त सामग्रीयों प्रकाशित शोध पत्र–पत्रिकाओं में छपे विवरण निबंध एवं लेख तथा भिन्न–भिन्न शोध ग्रन्थों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

तथ्य विश्लेषण :

प्राकृतिक कारण

1. जलवायु : जलवायु की भूमि क्षीणन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि कहीं–कहीं पर अधिक व कम वर्षा अथवा सूखे द्वारा जो स्थिति उत्पन्न होती है उससे मृदाक्षरण को बढ़ावा मिलता है। अत्यधिक सूखे की स्थिति में तेज हवाएँ मृदा कणों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहा ले जाती है जिससे मृदा का ह्रास होता है। इसी प्रकार अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ में एक स्थान की मिट्टी धीरे–धीरे कटकर अन्यत्र चली जाती है जिससे कभी–कभी पूरा क्षेत्र बंजर हो जाता है।
2. भू–आकृति : भू–आकृति के कारण भी मृदा–क्षरण अधिक होता है अधिक ढ़ालू भूमि में ढ़लाव के कारण उपरी क्षेत्र की मिट्टी बहुत तेजी से क्षरित हो जाती है और नदी नालों में जाकर जमा हो जाती है जिसके कारण बाढ़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है।
3. वनो की कटाई : बिहार मं वनों की कटाई के परिणामस्वरूप पृथ्वी का वानस्पतिक आवरण कम हो जाने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया तथा असंतुलित पर्यावरण की वजह से अत्यधिक वर्षा एवं सूखे से भूमि क्षरित होने लगी।
4. उर्वरकों का अधिक प्रयोग : हरित क्रांति के बाद बदली कृषि परिस्थितियों के कारण कृषि में रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिससे फसल उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई परन्तु रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते प्रयोग से मृदा की उत्पादकता में ह्रास हुआ तथा भूमिगत जल में प्रदूषण के भी प्रमाण मिले है। एक अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि यदि कृषि में किसी एक उर्वरक का प्रयोग लगातार किया जाय तो दूसरे तत्वों की कमी के साथ–साथ मृदा के भौतिक व रासायनिक गुणों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है और भूमि क्षीण होती जाती है।
5. भूमि प्रयोग में बदलाव : बढ़ती हुई आबादी के लिए खाद्यान, लकड़ी एवं चारा की आपूर्ति की व्यवस्था के लिए कृषकों में ऐसी भूमि पर भी खेती करना प्रारम्भ कर दिया जो कि खेती योग्य नहीं थी जिससे भूमि की उपरी परत पर वानस्पतिक आवरण समाप्त हो गया और जल अपरदन द्वारा उपरी मृदा, जो कि उपजाऊ थी, वह बहकर नदियों व नालों में जमा हो रही है, जिससे भूमि की उपजाऊ क्षमता कम हो रही है।
6. अति चराई : पशुओं का एक बड़ा भाग चड़ाई पर निर्भर है। चराई के विभिन्न श्रोतों में वन, स्थाई चारागाह, पेड़ एवं झाड़ी के क्षेत्र प्रमुख हैं। इन स्रोतो को आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाता है जिससे भूमि चारा–विहीन होती जा रही है और वन वृक्षों झाड़ियों के प्रवर्धन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिस कारण भूमि वनस्पति–विहीन होती जा रही है। परिणामस्वरूप भू–क्षरण बढ़ रहा है।
7. खनन : शुष्क व अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भू–खनन तेजी से बढ़ रहा है जो कि इन क्षेत्रों में भू–क्षरण का एक प्रमुख कारण है। खनन अवशेष को खेती योग्य भूमि के आस–पास या ढ़लान वाली भूमि व सड़को के किनारे छोड़ देने से धीरे–धीरे घुलनशील पदार्थ

पानी के साथ बहकर खेत में जमा होते है जिससे मिट्टी की रासायनिक संरचना प्रभावित होती है और भूमि कृषि योग्य नहीं रह जाती है।

परम्परागत कृषिवानिकी हजारों वर्ष पूर्व 'झूम खेती' के रूप में शुरू हुई। उसके बाद 'ट्वान्गया' पद्धति का प्रचलन हुआ जिसमें वन विभाग द्वारा लगाये गये जंगलों को 5 वर्ष तक खेती करने के लिए किसानों को दिया जाता था। देश के सभी भागो में किसानों द्वारा घर के आस–पास, खेत में एवं खेत की मेड़ो पर छिटपुट पेड़ लगना बहुत ही पुरानी परम्परा रही है जिससे किसानों को लकड़ी, ईंधन फल एवं चारा मिल जाता था। परन्तु आज ऐसी परम्परा समाप्त हो रही है। इस पद्धति में ईंधन व चारा देने वाले वृक्षों पंक्तियों के बीज में घास, दलहनी चारे या इन दोनों के मिश्रण को लगाते है। यह पद्धति बंजर व पथरीली तथा अनुपयोगी, भूमि में ईंधन व चारा प्राप्त करने के लिए उपयुक्त है।

बंजर/क्षीण भूमि में फसल उगाना प्रायः असंभव व कठिन तथा आर्थिक दृष्टिकोण से फायदेमंद नहीं होता है।

बंजर एवं क्षीण भूमि को उसकी भौतिक एवं रासायनिक संरचना तथा प्रकृति के अनुसार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

बिहार के पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्रों में मृदा अपरदन के कारण बहुत बड़े क्षेत्र में पहाड़ियाँ नग्न हो गई हैं। उन पर वनस्पतियाँ लगभग समाप्त हो गई हैं। ऐसी स्थिति अधिकतर शुष्क क्षेत्रों में देखने को मिलती है। क्योंकि लोगों ने अपने अल्पकालिक स्वार्थवश वहाँ की वनस्पतियों को नष्ट कर दिया तथा जो भूमि खेती के अनुकूल नहीं थी, ढ़ालू पहाड़ियों में मृदा अपरदन के कारण मिट्टी की परत बह गई और केवल पथरीली भूमि बची रह गई।

ऐसी मृदा जिसका पीएच मान 5.5 से कम हो अम्लीय कहलाती है। मृदा अम्लता पौधों के लिए भूमि में उपलब्ध पोषक तत्व और पौधें में पोषक तत्वों की प्राप्ति को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभावित करती है।

भूमि को प्रभावित करने वाले कारकों में से जल भराव भसी एक बड़ा कारण है। जल भराव के कई कारण है जिनमें से उचित जल निकास का अभाव, नहरों द्वारा जल रिसाव, अनुचित जल प्रबन्धन बाढ़ आदि प्रमुख हैं।

खनन कार्य संसार का प्राचीनतम एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्योग है। इसके द्वारा ही अनेक उद्योगों हेतु कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है। परन्तु अवैज्ञानिक ढ़ंग से किये गये खनन कार्य से भूमि की क्षीणता बढ़ती जा रही है। विंध्य क्षेत्र में कोयला, बॉक्साइट तथा पत्थर खनन से काफी बड़ा क्षेत्र समस्याग्रस्त हो गया है।

इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित उपयोग से बड़े पैमाने पर बेकार बंजर एवं क्षीण हो रही भूमि का बचाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अच्छी भूमि में भी भूमि क्षीणन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। यदि समय से ध्यान नहीं दिया गया

तो खेती योग्य भूमि भी विकृतिकरण की तरफ बढ़ेगी जिससे खाद्यान उत्पादन जैसी समस्या उत्पन्न हो सकती है।

निष्कर्ष

औद्योगिक विकास के कारण कृषि फसलों वाली भूमि अन्य उपयोग में लाई जाने लगी यही कारण है कि बिहार में हरित क्षेत्रों का विस्तार घट गया उद्योगों में वायु एवं जल संशोधन की व्यवस्थाये न होने के कारण वायु एवं जल प्रदूषण नगर क्षेत्रों में निरन्तर बढ़ता चला गया यह आज भौगोलिक पर्यावरण के ह्रास का प्रमुख कारण बन रहा है। बढ़ता हुआ प्रदूषण घटते वन क्षेत्र तथा बढ़ती हुई अबादी का प्रतिकूल प्रभाव दरभंगा जिला के पर्यावरण पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है।

संदर्भ

1. शर्मा दीप्ति और महेन्द्र कुमार, पर्यावरण संसरण, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 2009, पृ0 132
2. कौशिक एस0डी0मानव भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, 2005, पृ0 157
3. WWW.edf.org/page.cfm?tagID=65/
4. शर्मा दीप्ति और महेन्द्र कुमार पर्यावर संरक्षण, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली, 2009, पृ0 179
5. Mamorigac B. Advance Geography of India, Agra, 2008 P. 292
6. http://www.seed.sib.com/contentaspx!id-2314
   दिल्ली, 2009, पृ0 179
7. मौर्य एस0डी0 समाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2010, पृ0 201
8. हिन्दुस्तान टाईमस 16 जुलाई 2008